परमात्म ऊर्जा

असन्तुष्टता का कारण यह होता है जो कोई की वाणी व संस्कार व कर्म देखते हो वो अपने विवेक से यथार्थ नहीं लगता है, इसी कारण ऐसा बोल व कर्म हो जाता है जिससे दूसरी आत्मा असन्तुष्ट हो जाती है। कोई का भी कोई संस्कार व शब्द व कर्म देख आप समझते हो- यह यथार्थ नहीं है व नहीं होना चाहिए; फिर भी अगर उस समय समाने की व सहन करने की शक्तियां धारण करो तो आपकी सहन शक्ति व समाने की शक्ति ऑटोमेटिकली उसको अपने अयथार्थ चलन का साक्षात्कार करायेगी। लेकिन होता क्या है वाणी द्वारा व नैन-चैन द्वारा उसको महसूस कराने व साक्षात्कार कराने लिए आप लोग भी अपने संस्कारों के वश हो जाते हो। इस कारण न स्वयं सन्तुष्ट, न दूसरा सन्तुष्ट होता है। उसी समय अगर समाने की शक्ति हो तो उसके आधार से व सहन करने की शक्ति के आधार से उनके कर्म व संस्कार को थोड़े समय के लिए अवॉयड कर लो तो आपकी सहन शक्ति व समाने की शक्ति उस आत्मा के ऊपर सन्तुष्टता का बाण लगा सकती है। यह न होने कारण असन्तुष्टता होती है। तो सभी के सम्पर्क में सर्व को सन्तुष्ट करने व सन्तुष्ट रहने के लिए यह दो गुण व दो शक्तियां बहुत आवश्यक हैं। इससे ही आपके गुण गायन होंगे। भले उसी समय विजय नहीं दिखाई देगी, हार दिखाई देगी। लेकिन उसी समय की हार अनेक जन्मों के लिए आपके गले में हार डालेगी। इसलिए ऐसी हार को भी जीत मानना चाहिए। यह कमी होने कारण इस सब्जेक्ट में जितनी सफलता होनी चाहिए उतनी नहीं होती है। बुद्धि में नॉलेज होते हुए भी किस समय किस रूप से किसको नॉलेज व युक्ति से बात देनी है, वह भी समझ होनी चाहिए। समझते हैं- मैंने उनको शिक्षा दी। लेकिन समय नहीं है, उनकी समर्थी नहीं है तो वह शिक्षा, शिक्षा का काम नहीं करती है। जैसे धरती देखकर और समय देखकर बीज बोया जाता है तो सफलता भी निकलती है। समय न होगा व धरनी ठीक नहीं होगी तो फिर भले कितनी भी बड़ी क्वालिटी का बीज हो लेकिन फिर वह फल नहीं निकलेगा। इसी रीति ज्ञान के प्वाइंट्स व शिक्षा व युक्ति देनी है तो धरनी और समय को देखना है। धरती अर्थात् उस आत्मा की समर्थी को देखो और समय भी देखो तब शिक्षा रूपी बीज फल दे सकता है। समझा!

कथा सरिता

सही राह

एक बार की बात है, जब गौतम बुद्ध जी मगध राज्य के एक गांव में ठहरे हुए थे। गांव से थोड़ा बाहर एक मोची अपने परिवार के साथ रहता था। उस मोची के घर के पास एक तालाब था। एक दिन रोज़ की तरह सुबह मोची तालाब किनारे पानी लेने गया। वहाँ उसने तालाब में एक बहुत ही अद्भुत पुष्प देखा। वह पुष्प देखने में बहुत ही सुंदर था और चमत्कारिक भी प्रतीत हो रहा था।

मोची ने तुरंत ही अपनी पत्नी को बुलाया और वह पुष्प उसे दिखाया। मोची की पत्नी आध्यात्मिक और धर्म में आस्था रखने वाली थी। वह पुष्प को देखते ही समझ गयी कि ज़रूर कल यहाँ से गौतम बुद्ध जी गुज़रे होंगे, उन्हीं के प्रताप से यह पुष्प खिला है।

पुष्प को चमत्कारिक मान कर मोची ने एक योजना बनाई। उसने अपनी योजना के बारे में पत्नी को बताया कि वह यह पुष्प को राजा को देगा और उनसे खूब सारी स्वर्ण मुद्राएं लेगा। उसकी पत्नी ने भी सोचा कि यह पुष्प उनके किसी काम का नहीं है। इसे राजा को ही दे दो, कम से कम कुछ कमाई तो होगी।

पत्नी की सहमति के बाद, मोची राजमहल की ओर निकल गया। राजमहल के रास्ते में उसे एक व्यापारी मिलता है, मोची के हाथ में पुष्प देख कर वह रूक जाता है। वह मोची से पूछता है कि भाई ये पुष्प लेकर कहाँ जा रहे हो?

मोची कहता है कि मैं यह पुष्प लेकर राजा के पास जा रहा हूँ। इसे राजा को भेंट करके राजा से मुंह मांगा इनाम लूंगा।

व्यापारी ने मोची को प्रस्ताव दिया कि तुम ये पुष्प मुझे दे दो, बदले में मैं तुम्हें 100 स्वर्ण मुद्राएं दूंगा। मोची सोच में पड़ गया। उसने सोचा कि जब व्यापारी इस पुष्प के लिए 100 स्वर्ण मुद्राएं दे रहा है, तो राजा तो और ज़्यादा देगा। यही सोचते हुए उसने व्यापारी को पुष्प देने से मना कर दिया।

थोड़ा आगे चला ही था कि उसे रास्ते में राजा आते हुए नज़र आए जो गौतम बुद्ध के दर्शन के लिए जा रहे थे। राजा भी मोची के हाथ में वो दिव्य पुष्प देख कर अचंभित हो गये। राजा ने मोची को पुष्प के बदले 1000 स्वर्ण मुद्राएं देने के लिए कहा। यह सुनते ही मोची के मन में एक अजीब-सी चेतना आई। और वह राजा को पुष्प न देकर दौड़ता हुआ सीधे महात्मा बुद्ध के पास जा पहुंचा।

महात्मा बुद्ध जी मोची को देखकर हैरत में पड़ गये। उन्होंने मोची से पूछा तो मोची ने उन्हें सारी बात बताई। इसके बाद मोची ने वह पुष्प महात्मा गौतम बुद्ध के चरणों में अर्पित किया और उनसे कहा कि पहले तो मेरे मन में पुष्प को देखकर लालच आ गया था। लेकिन अब मैं समझ गया हूँ कि जिसकी छाया पड़ने से ही एक पुष्प इतना दिव्य हो गया हो अगर उसकी शरण में मैं चला जाऊं तो मेरा जीवन भी धन्य हो जायेगा। इसके बाद वह आजीवन महात्मा गौतम बुद्ध का शिष्य बनकर रहा।

कहानी से सीख : इस कहानी ने हमें सिखाया कि हमारी ज़िंदगी में हमें बहुत सी चीज़ें अपनी तरफ आकर्षित करती हैं, लेकिन हमें उनके लालच में न फंसकर अपने ज्ञान का प्रयोग करके जीवन में सही राह को चुनना चाहिए।

मुम्बई-घाटकोपर। भारतीय नौसेना के सामग्री अधीक्षक और सामग्री संगठन के अधिकारियों ने मुम्बई में 'एट होम नेवी वीक समारोह' में ब्रह्माकुमारीज़,योग भवन,मुम्बई घाटकोपर सबज़ोन को सम्मानित अतिथि के रूप में आमंत्रित किया, जो नौसेना और नागरिक,विशेष करके समाज में सकारात्मक योगदान देने वाले नागरिकों को जोड़ने का प्रयास है। इस दौरान राजयोगिनी ब्र.कु. शकु दीदी,अति. निदेशिका,ब्रह्माकुमारीज़ घाटकोपर सबज़ोन ने कार्यक्रम में भाग लेकर सभी का मार्गदर्शन किया। इस मौके पर कोमोडोर गोकुल कृष्ण दत्ता,सामग्री अधीक्षक, नौ सेना के कर्मचारी व उनके परिवार सहित आमंत्रित नागरिक मौजूद रहे।

जालंधर-ग्रीन पार्क(पंजाब)। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र में विभिन्न प्रकार के खेल, डांस व ड्रामा का आयोजन कर धूमधाम से मनाया गया दीपावली का त्योहार। इस दौरान सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रेखा बहन व अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।

पतरातू-पीटीपीएस(झारखंड)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा पतरातू डैम छठ घाट पर आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस मौके पर राष्ट्र संचेतना संस्था के अध्यक्ष राकेश प्रसाद द्वारा स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रोशनी बहन, ब्र.कु. रीना बहन व ब्र.कु. रामदेव भाई को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। साथ ही ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से अध्यक्ष राकेश प्रसाद, डॉ. नारायण प्रसाद तथा अन्य सदस्यों को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका व ईश्वरीय सौगात भेंट की गई।

सोनीपत-हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा जिला कारागृह में कैदियों को 'कर्म गति और व्यवहार शुद्धि' विषय पर सम्बोधित करने के पश्चात् समूह चित्र में मुख्य वक्ता ब्र.कु. भगवान भाई,माउण्ट आबू, स्थानीय ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मंजू बहन, जेल उपाधीक्षक कृष्णा मान, वकील रामचंद्र रोहिला, रिटा. एयरपोर्ट डायरेक्टर प्रेम धमीजा, ब्र.कु. दीपा बहन, ब्र.कु. शिला बहन तथा अन्य पुलिसकर्मी।

पुखरायां-उ.प्र.। दीपावली महोत्सव कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करने व केक काटने के पश्चात् वरिष्ठ नेत्र चिकित्सक डॉ. अवध दुबे, समाज सेवी मधुसूदन गोयल, नगर अध्यक्ष प्रतिनिधि करुणा शंकर दिवाकर व अन्य मेहमानों को ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए ब्र.कु. ममता दीदी, ब्र.कु. कोमल बहन, ब्र.कु. ललिता बहन व ब्र.कु. पूजा बहन।

नरवाना-हरियाणा। प्राकृतिक आहार एवं मेडिटेशन शिविर कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए डीएसपी अमित भाटिया, ब्र.कु. सीमा दीदी, ब्र.कु. मीना बहन, रोटरी क्लब प्रधान राजेंद्र बंसल, सचिव दीपक मित्तल, मुख्य वक्ता जिग्नेश भाई व ब्र.कु. कृष्णा बहन।